Program Outcomes (PO),
Program Specific Outcomes (PSO)
And Course Outcomes (CO)

Department of Sanskrit

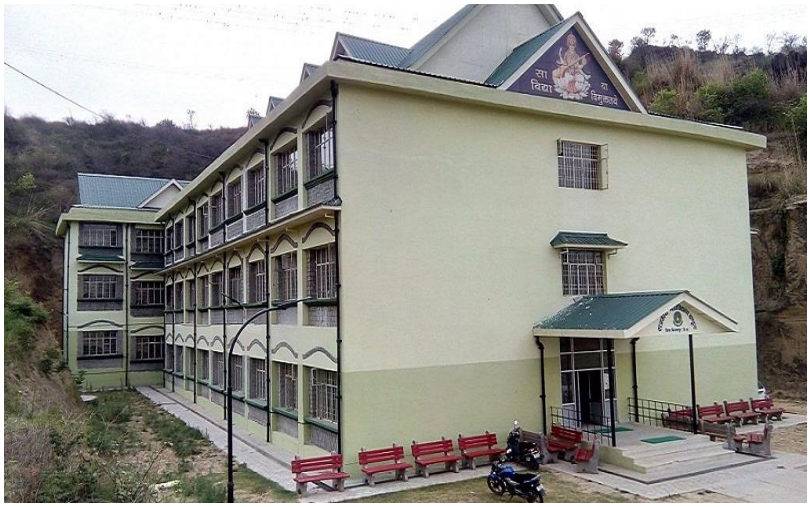

Govt. College Jhandutta Distt. Bilaspur (H.P.)

Prepared by:

Deepak Kumar
Assistant Professor
Department of Sanskrit

Program Outcomes (PO), Program Specific Outcomes (PSO) and Course Outcomes (CO) for **B.A. Sanskrit**

Department of Sanskrit	After successful completion of three-year degree program in Political Science a student should be able to;
Program Outcomes (PO) **B.A. Sanskrit**	Sanskrit is a very rich language of IE language group. Sanskrit is a medium to know about ancient Indian history, culture, religion, social life through its text. The academic programme of both Honours and General degree courses are designed not only professional skill but also develop a deep understanding of rich heritage and dynamic prevalent scenario of India through various Sanskrit texts. PO1. Develop a strong concept of ancient Indian history, philosophy and literature. PO2. Enhance communication skills-Listening, Speaking, Reading, Writing. PO3. Students will be able to write Devnagari scripts which provide them paleographical knowledge to read out the script of modern languages like Hindi and Marathi. PO4. Increase in depth knowledge of the Core Areas of the subject. PO5. Students will demonstrate the skill needed to participate in conversation that builds knowledge with collaboration.
Program Specific Outcomes (PSO) **B.A. Sanskrit**	PSO1. Reasonable understanding of multi-disciplinary relevance of literature of Sanskrit like Veda, Philosophy, Grammar, Kavya, Smitisastra etc. PSO2. To make them eligible for higher education. PSO3. Develop research aptitude and independent thinking PSO4. After becoming graduate, students can apply in the field of UPSE, WBCS etc. And also after post-graduation they can apply against teaching posts in schools, colleges and other educational institutions
Course Outcomes (CO) B. A. Sanskrit **First Year**	
Sub. Code/Course	**Outcomes**

	Upon completion of this course students will have following opportunities and skills.
SKT-DSC-101 **संस्कृत काव्य**	कवि की रचना को काव्य कहते हैं। इसमें महाकवि कालिदास द्वारा विरचित रधुवंशमहाकाव्यम् के प्रथम सर्ग के प्रमुख पद्यों को संकलित किया गया है, जिसमें रघुवंशी राजाओं की विशेषताओं, राजा दिलीप की विशेषताओं का वर्णन है। इसमें माघ रचित शिशुपालवधम्, एवं नीति साहित्य के कुछ अंशों तथा संस्कृत साहित्य के इतिहास को अध्ययन करने का अवसर मिलेगा।
SKT-DSC-101 **संस्कृत गद्य काव्य**	इसके अन्तर्गत गद्य साहित्य, गद्य काव्य परिचय एवं जीवनोपयोगी कुछ गद्य काव्यों का संग्रह किया गया है, जिनमें शुकनाशोपदेश तथा शिवराजविजयम् गद्यकाव्यों का अध्ययन किया जाएगा। जिससे व्यक्ति राजनीति से सम्बन्धित विषयों और राजा के पराक्रम, नीति, व्यवहार आदि महत्वपूर्ण विषयों से परिचित होंगें।
SKT-DSC-103 **नीति साहित्य**	उचित समय और उचित स्थान पर उचित कार्य करने की कला को नीति कहते हैं। नीति, सोच समझकर बनाये गये सिद्धान्तों की प्रणाली है जो उचित निर्णय लेने और सम्यक परिणाम पाने में मदद करती है। नीति साहित्य एक साहित्यिक विधा है जिसमें पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों एवं अन्य निर्जीव वस्तुओं को मानव जैसे गुणों वाला दिखाकर उपदेशात्मक कथा कही जाती है, नीति साहित्य हमें नीतिप्रद एवं आचार-विचार की शिक्षा तथा कर्तव्य-अकर्त्तव्य का उपदेश प्रदान करते हैं।
SKT-AECC-104 **उपनिषद्,** **श्रीमद्भगवद्गीता तथा** **पाणिनीयशिक्षा**	उपनिषद् हिन्दू धर्म के महत्त्वपूर्ण श्रुति धर्मग्रन्थ हैं। ये वैदिक वाङ्मय के अभिन्न भाग हैं। ये संस्कृत में लिखे गये हैं। इनकी संख्या लगभग 108 है, किन्तु मुख्य उपनिषद 13 हैं। हर एक उपनिषद किसी न किसी वेद से जुड़ा हुआ है। इनमें परमेश्वर, परमात्मा-ब्रह्म और आत्मा के स्वभाव और सम्बन्ध का बहुत ही दार्शनिक और ज्ञानपूर्वक वर्णन दिया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता या भगवद्गीता या गीता का भारतीय विचारधारा के इतिहास में लोकप्रियता की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। यह हिन्दुओं का सबसे पवित्र और सम्मानित ग्रंथ है। यह महाभारत के छठवें पर्व अर्थात् भीष्मपर्व का भाग है। इसमें महाभारत युद्ध के समय कर्त्तव्यविमुख अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दिये गये उपदेशों का संकलन है। इसमें 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं। उपनिषद् तथा श्रीमद्भगवद्गीता मुख्यतः दार्शनिक ग्रन्थ हैं इनके अध्ययन से हम ईश्वरस्वरूप, आत्मा का स्वरूप, कर्मयोग इत्यादि अनेक आध्यात्मिक विषयों को जान सकते हैं तथा अपने व्यक्तित्व और मानसिक विकास में वृद्धि कर सकते हैं। पाणिनीयशिक्षा शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक है। यह आचार्य पाणनि द्वारा विरचित है। इसके माध्यम से वर्णों के उच्चारणस्थान स्वरों के प्रकार, इत्यादि संस्कृत भाषा के प्रारम्भिक सिद्धान्तों को सरलतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है।
Second Year	
SKT-DSC-201 **संस्कृत-नाटक**	इसके अन्तर्गत नाटक का उद्भव और विकास, महाकवि कालिदास द्वारा विरचित विश्वप्रसिद्ध अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक एवं कर्णभार नाटक का निरूपण किया गया है, जिसमें मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा व्यावहारिक विषयों को अध्ययन किया जाएगा।
SKT-DSC-202 **संस्कृत-व्याकरण**	किसी भी भाषा की शुद्धता एवं समृद्धि के लिये व्याकरण की महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है, इसमें व्याकरण के प्रारम्भिक विषयों का सरलतापूर्ण वर्णन किया गया है, जो संस्कृत भाषा की उच्चारण एवं शुद्धता की दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं।

SKT-DSC-203 **व्याकरण एवं संयोजन**	संस्कृत व्यकरण के अन्तर्गत व्याकरण के प्रमुख सरल एवं गूढ़ विषयों का अध्ययन किया जाएगा जो संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के अध्ययन की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।
SKT-AEEC-204 **आयुर्वेद के मूल सिद्धांत**	इसके अन्तर्गत आयुर्वेद के मूल सिद्धांतो का निरूपण किया गया है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से जीवन के लिये बहुत उपयोगी हैं।
SKT-AEEC-205 **संस्कृत छंद एवं गायन**	इस विषय में संस्कृत साहित्य के प्रमुख छंदों को वर्णित किया गया है, एवं उनके गायन पद्धति का निरूपण किया गया है, जो संस्कृत भाषा में विभिन्न प्रकार की रचनाओं के लिये बहुत सहायक हैं।
Third Year	
SKT-DSC-301 **व्यक्तित्व विकास का भारतीय दृष्टिकोण**	इसमें व्यक्ति, व्यक्ति की अवधारणा, व्यक्ति के प्रकार तथा व्यवहार सुधार के मापदंडों का निरूपण किया गया है। जो व्यक्ति को आदर्श जीवन जीने के लिये बहुत सहायक हैं।
SKT-DSC-302 **साहित्यिक समालोचना**	इसके अंतर्गत काव्यवैशिष्ट्य, काव्यभेद, काव्यस्वरूप, काव्यप्रयोजन, शब्दशक्तियाँ, तथा रस का विवेचन किया गया है। साहित्यिक विधा के विद्यार्थियों के लिए उपर्युक्त विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
SKT-DSC-303 **पातञ्जल योगसूत्र**	प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अंतर्गत योग के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया जाएगा तथा योग की उपादेयता को वर्णित किया जाएगा, जिसके अध्ययन से व्यक्ति शारिरिक, मानसिक तथा वैचारिक रूप से जीवन में समृद्धि प्राप्त कर सकता है।
SKT-DSC-304 **भाषाविज्ञान के मूलभूत सिद्धान्त**	इसमें भाषा, भाषाविज्ञान, भाषापरिवार, वाक्यन्त्र तथा उससे निकलने वाली ध्वनियां, अर्थपरिवर्तन इत्यादि विषयों का अध्ययन किया जाएगा जो भाषा की शुद्धता, वैज्ञानिकता के लिये बहुत उपयोगी है।
SKT-DSC-305 **भारतीय रंगशाला**	इसके अंतर्गत भारतीय रंगशाला का इसिहास एवं परंपरा, रंगशाला निर्माण प्रकार, रंगमंच, अभिनय, नायक, वस्तु, रस इत्यादि नाट्यशास्त्र के प्रमुख विषयों का निरूपण किया गया है, जो नाट्यकला की दृष्टि से जीवन के लिए उपयोगी हैं।
SKT-DSC-305 **भारतीय वास्तुशास्त्र**	प्रस्तुत पाठ्यक्रम में वास्तुशास्त्र, वास्तुस्वरूप, भूमिपरीक्षण, दिक्साधन इत्यादि ज्योतिष की वास्तुशास्त्र विधा के प्रमुख विषयों को निरूपित किया गया है, इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र वास्तुशास्त्र के कई प्रमुख सिद्धान्तों से अवगत होंगे जो जीवन के क्षेत्र में सहायक रहेंगें।